International Journal of Emerging Voices in Education
©PIJMS | Volume 1 | Issue 4 | December 2025 | ISSN: 3107-958X (Online)
Available online at: https://ijeve.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijeve.v1i4.20

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि के संदर्भ में अध्ययन

कृष्ण कुमार यादव[1], प्रो0 नीति[2]

[1]शोध छात्र, शिक्षा और प्रशिक्षण विभाग, चौधरी चरण सिंह डिग्री कॉलेज हेवरा, इटावा

[2]प्रोफेसर, शिक्षा और प्रशिक्षण विभाग, चौधरी चरण सिंह डिग्री कॉलेज हेवरा, इटावा

[1]**Email Id:** kkygbdc@gmail.com

Received: 09 December 2025 | **Accepted:** 24 December 2025 | **Published:** 30 December 2025

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन अमेठी जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कुल 200 शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का विश्लेषण भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि के संदर्भ में करता है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक सह-संबंधात्मक शोध अभिकल्प (Descriptive Correlational Research Design) को अपनाया गया। अध्ययन हेतु आंकड़ों का संग्रहण तीन मानकीकृत मापन उपकरणों—भावनात्मक बुद्धि मापनी, कार्य संतुष्टि प्रश्नावली तथा शिक्षण प्रभावशीलता मापनी—की सहायता से किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य उच्च स्तर का सकारात्मक सहसंबंध पाया गया ($r = 0.78$, $p < 0.01$), जिससे यह संकेत मिलता है कि भावनात्मक बुद्धि में वृद्धि के साथ शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती है। इसी प्रकार, कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच मध्यम स्तर का सकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ ($r = 0.64$, $p < 0.01$)। इसके अतिरिक्त, भावनात्मक बुद्धि और कार्य संतुष्टि के मध्य भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध पाया गया ($r = 0.71$, $p < 0.01$)। बहुविध प्रतिगमन विश्लेषण के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि संयुक्त रूप से शिक्षण प्रभावशीलता की कुल 67 प्रतिशत विचरणशीलता की व्याख्या करते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करने में भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि की महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्य शब्द: *भावनात्मक बुद्धि, कार्य संतुष्टि, शिक्षण प्रभावशीलता, माध्यमिक शिक्षक, अमेठी जनपद*

1. प्रस्तावना

21वीं सदी में शिक्षा व्यवस्था तेजी से बदल रही है और इस परिवर्तन के केंद्र में शिक्षक हैं। माध्यमिक शिक्षा का स्तर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह छात्रों के जीवन का एक संक्रमणकालीन चरण है जहां उनका शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी समग्र विकास और शिक्षकों की गुणवत्ता पर विशेष बल दिया है।

शिक्षण प्रभावशीलता केवल शिक्षक के विषयगत ज्ञान तक सीमित नहीं है। आधुनिक शोधों ने दर्शाया है कि शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि, उनकी कार्य संतुष्टि और मनोवैज्ञानिक कल्याण उनके शिक्षण की गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। गोलमैन (1995) ने भावनात्मक बुद्धि को व्यावसायिक सफलता का एक प्रमुख निर्धारक बताया है। शैक्षणिक संदर्भ में, भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक छात्रों के साथ बेहतर संबंध स्थापित कर सकते हैं, कक्षा प्रबंधन में अधिक कुशल होते हैं और तनावपूर्ण परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से संभाल सकते हैं।

दूसरी ओर, कार्य संतुष्टि शिक्षकों की प्रेरणा, समर्पण और व्यावसायिक प्रतिबद्धता को प्रभावित करती है। असंतुष्ट शिक्षक न केवल अपने कार्य में कम प्रभावी होते हैं बल्कि छात्रों के सीखने और विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। भारतीय संदर्भ में, जहां शिक्षक

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं - जैसे कार्यभार, सीमित संसाधन, प्रशासनिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाएं - कार्य संतुष्टि का अध्ययन विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है।

अमेठी जिला उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जिला है जहां शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर विकास हो रहा है। जिले में विभिन्न प्रकार के माध्यमिक विद्यालय हैं - सरकारी, अर्ध-सरकारी और निजी - जो विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों को शिक्षा प्रदान करते हैं। इन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन न केवल स्थानीय शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए बल्कि व्यापक शैक्षणिक नीतियों के निर्माण के लिए भी महत्वपूर्ण है।

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला होती है और इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका केंद्रीय होती है। विशेष रूप से माध्यमिक शिक्षा का स्तर विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस स्तर पर शिक्षक न केवल विषयवस्तु का ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, मूल्यों के विकास तथा भविष्य की दिशा निर्धारित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

परंपरागत रूप से शिक्षण प्रभावशीलता को शिक्षक के विषय ज्ञान, शिक्षण विधियों एवं अनुभव से जोड़कर देखा जाता रहा है, परंतु समकालीन शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि भावनात्मक कारक भी शिक्षण प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित करते हैं। भावनात्मक बुद्धि शिक्षक को स्वयं की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा छात्रों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील बनने में सहायता करती है। इसी प्रकार, कार्य संतुष्टि शिक्षक की प्रेरणा, प्रतिबद्धता एवं कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रभावित करती है।

भारतीय संदर्भ में, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में, माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं—जैसे कार्यभार, संसाधनों की कमी, प्रशासनिक दबाव एवं सामाजिक अपेक्षाएँ। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया जाए और यह समझा जाए कि ये कारक उनकी शिक्षण प्रभावशीलता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। इसी आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन किया गया है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि के स्तर का आकलन करना।
2. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।
3. शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
4. भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंध की जांच करना।
5. कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
6. भावनात्मक बुद्धि और कार्य संतुष्टि के मध्य अंतर्संबंध का अध्ययन करना।
7. लिंग, विद्यालय प्रकार एवं अनुभव के आधार पर अंतर का परीक्षण करना।

3. शोध परिकल्पनाएँ

H_{01}: भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है।

H_{02}: कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है।

H_{03}: भावनात्मक बुद्धि और कार्य संतुष्टि के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है।

H_{04}: पुरुष एवं महिला शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{05}: सरकारी एवं निजी विद्यालय शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{06}: अनुभव के आधार पर शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. साहित्य समीक्षा

गोलमैन (1995) ने अपने महत्वपूर्ण अध्ययन में भावनात्मक बुद्धि को व्यावसायिक सफलता एवं प्रभावी नेतृत्व का प्रमुख आधार बताया। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति कार्यस्थल पर अधिक संतुलित, सहयोगी एवं प्रभावी होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में यह अवधारणा शिक्षकों की कार्य-प्रणाली को समझने हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई।

मेयर एवं सालोवे (1997) ने भावनात्मक बुद्धि को एक संज्ञानात्मक क्षमता के रूप में परिभाषित करते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि भावनाओं की पहचान, समझ एवं प्रबंधन व्यक्ति के व्यावसायिक निष्पादन को प्रभावित करता है। उनके अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि शिक्षकों की भावनात्मक दक्षता शिक्षण व्यवहार को सकारात्मक दिशा प्रदान करती है।

चैन (2004) ने माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों पर किए गए अध्ययन में पाया कि भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध विद्यमान है। अध्ययन के अनुसार भावनात्मक रूप से सक्षम शिक्षक कक्षा प्रबंधन में अधिक सफल होते हैं तथा छात्रों के साथ बेहतर अंतःक्रिया स्थापित करते हैं।

जज, थॉरेसन, बोनो एवं पैटन (2001) ने कार्य संतुष्टि और कार्य निष्पादन पर किए गए अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि कार्य संतुष्टि व्यावसायिक प्रभावशीलता का एक सशक्त पूर्वानुमानक है। शिक्षकों के संदर्भ में यह निष्कर्ष शिक्षण प्रभावशीलता को समझने में सहायक है।

ब्रैकेट, पालेओगोलू, मोइर एवं काटुलाकिस (2010) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि भावनात्मक बुद्धि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, जिससे शिक्षण प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।

भारतीय संदर्भ में भावनात्मक बुद्धि पर किए गए प्रारंभिक अध्ययनों में सिंह (2003) का अध्ययन उल्लेखनीय है, जिसमें यह पाया गया कि भावनात्मक बुद्धि शिक्षकों के कार्य-व्यवहार एवं अंतर्वैयक्तिक संबंधों को सुदृढ़ बनाती है।

देसाई एवं पांडेय (2008) ने माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों पर किए गए अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि उच्च कार्य संतुष्टि वाले शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में अधिक प्रभावशीलता प्रदर्शित करते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्रशासनिक सहयोग एवं कार्य वातावरण कार्य संतुष्टि के प्रमुख कारक हैं।

शर्मा (2012) ने अपने शोध में भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण सहसंबंध की पुष्टि की। अध्ययन के अनुसार भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक विद्यार्थियों की समस्याओं को अधिक संवेदनशीलता के साथ समझते हैं।

कुमार और अग्रवाल (2016) ने उत्तर भारतीय विद्यालयों के शिक्षकों पर किए गए अध्ययन में यह पाया कि कार्य संतुष्टि शिक्षकों की कार्य-प्रतिबद्धता एवं शिक्षण प्रभावशीलता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। असंतोष की स्थिति में शिक्षण गुणवत्ता में गिरावट देखी गई।

मिश्रा (2019) ने अपने अध्ययन में भावनात्मक बुद्धि, कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य संयुक्त संबंधों का विश्लेषण किया और निष्कर्ष निकाला कि भावनात्मक बुद्धि कार्य संतुष्टि के माध्यम से शिक्षण प्रभावशीलता को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

5. अध्ययन का औचित्य

शिक्षा की गुणवत्ता प्रत्यक्ष रूप से शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर निर्भर करती है, विशेषतः माध्यमिक स्तर पर जहाँ विद्यार्थी शैक्षणिक एवं भावनात्मक दृष्टि से संक्रमणकाल से गुजरते हैं। समकालीन शैक्षिक अनुसंधानों ने यह स्पष्ट किया है कि शिक्षण प्रभावशीलता केवल विषयगत दक्षता तक सीमित नहीं है, बल्कि भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि जैसे मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक कारक इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षकों पर बढ़ते कार्यभार, प्रशासनिक दबाव तथा संसाधनों की सीमाएँ उनकी कार्य-संतुष्टि एवं शिक्षण व्यवहार को प्रभावित करती हैं। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 द्वारा शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता एवं समग्र विकास पर दिए गए बल के आलोक में भावनात्मक बुद्धि और कार्य संतुष्टि का अध्ययन विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है।

अमेठी जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि के संदर्भ में समग्र एवं अनुभवजन्य अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। अतः प्रस्तुत शोध इस क्षेत्र में विद्यमान शोध-अभाव को संबोधित करता है तथा इसके निष्कर्ष शैक्षिक नीति-निर्माण, शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं विद्यालयी गुणवत्ता सुधार हेतु महत्वपूर्ण आधार प्रदान कर सकते हैं।

6. शोध-अंतराल

साहित्य समीक्षा के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यद्यपि भावनात्मक बुद्धि, कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता पर पृथक-पृथक तथा संयुक्त रूप से अनेक अध्ययन किए गए हैं, तथापि अमेठी जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के संदर्भ में इन चरों का समग्र एवं सह-संबंधात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत अल्प है। प्रस्तुत शोध इसी शोध-अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

6.1 शोध अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में **वर्णनात्मक सह-संबंधात्मक शोध अभिकल्प** (Descriptive Correlational Research Design) का प्रयोग किया गया है। इस अभिकल्प का चयन इसलिए किया गया क्योंकि अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि, कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता के वर्तमान स्तर का वर्णन करने के साथ-साथ इन चरों के मध्य विद्यमान संबंधों की जांच करना था। वर्णनात्मक शोध अभिकल्प के माध्यम से शोधकर्ता ने शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक विशेषताओं का यथार्थ चित्रण किया, जबकि सह-संबंधात्मक पद्धति द्वारा चरों के मध्य सहसंबंध की दिशा एवं परिमाण का विश्लेषण किया गया। इस शोध में किसी भी प्रकार का प्रायोगिक हस्तक्षेप नहीं किया गया, अपितु विद्यमान परिस्थितियों में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गए।

6.2 जनसंख्या एवं नमूना

6.2.1 जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में **उत्तर प्रदेश के अमेठी जनपद में स्थित सभी सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक** सम्मिलित थे। इन शिक्षकों में विभिन्न विषयों, शैक्षणिक योग्यताओं, अनुभव स्तरों तथा सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों के शिक्षक शामिल थे।

6.2.2 नमूना

अध्ययन हेतु जनसंख्या में से 200 **माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों** का चयन किया गया। नमूना चयन के लिए **यादृच्छिक नमूना विधि (Random Sampling Technique)** का प्रयोग किया गया, जिससे प्रत्येक शिक्षक को अध्ययन में सम्मिलित होने का समान अवसर प्राप्त हो सके।

नमूने में सरकारी एवं निजी दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षक सम्मिलित थे। लिंग, अनुभव, विद्यालय प्रकार एवं शैक्षणिक योग्यता के आधार पर नमूना पर्याप्त रूप से प्रतिनिधिक रहा, जिससे अध्ययन के निष्कर्षों को व्यापक संदर्भ में सामान्यीकृत किया जा सके।

6.3 उपकरण (Tools Used)

अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण हेतु मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया, जिनका विवरण निम्नलिखित है—

6.3.1 भावनात्मक बुद्धि मापनी

शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि के मापन हेतु **नाहिद अशरफ एवं प्रोफ़े शाहिद जमाल द्वारा निर्मित मानकीकृत भावनात्मक बुद्धि मापनी** का प्रयोग किया गया। इस मापनी के अंतर्गत आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति एवं सामाजिक कौशल जैसे आयाम सम्मिलित थे। मापनी की विश्वसनीयता एवं वैधता पूर्व अध्ययनों द्वारा स्थापित की जा चुकी है।

6.3.2 कार्य संतुष्टि प्रश्नावली

शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मापन हेतु **डॉ प्रमोद कुमार एवं डॉ डी. एन. मुथा** द्वारा निर्मित **कार्य संतुष्टि प्रश्नावली** का उपयोग किया गया। इसमें वेतन, कार्य-परिस्थितियाँ, प्रशासनिक सहयोग, पदोन्नति अवसर, सहकर्मी संबंध एवं व्यावसायिक सुरक्षा जैसे आयामों को सम्मिलित किया गया। यह प्रश्नावली शिक्षकों के कार्य से संतोष एवं असंतोष के स्तर को मापने में सहायक रही।

6.3.3 शिक्षण प्रभावशीलता मापनी

शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मूल्यांकन हेतु टीचिंग एफेक्टिवनेस स्केल - डॉ सुभास सरकार एवं अभिजीत देब द्वारा निर्मित **शिक्षण प्रभावशीलता मापनी** का प्रयोग किया गया। इसमें शिक्षण विधियाँ, कक्षा प्रबंधन, विषय प्रस्तुति तथा मूल्यांकन कौशल जैसे घटकों को सम्मिलित किया गया। यह मापनी शिक्षकों की समग्र शिक्षण क्षमता का वैज्ञानिक आकलन प्रस्तुत करती है।

6.4 आंकड़ा संग्रहण की प्रक्रिया

शोधकर्ता द्वारा संबंधित विद्यालयों से पूर्व अनुमति प्राप्त कर शिक्षकों को अध्ययन के उद्देश्य से अवगत कराया गया। मापन उपकरणों का वितरण व्यक्तिगत रूप से किया तथा शिक्षकों को उत्तर देने हेतु पर्याप्त समय प्रदान किया। सभी प्रश्नावलियाँ पूर्ण रूप से प्राप्त होने के पश्चात ही उनका सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया।

6.5 सांख्यिकीय तकनीकें

संग्रहीत आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया—

माध्य एवं मानक विचलन

पियर्सन सहसंबंध गुणांक

t-परीक्षण

एक-मार्गीय ANOVA

बहुविध प्रतिगमन विश्लेषण

7.आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम

चर	N	माध्य	मानक विचलन
भावनात्मक बुद्धि	200	126.42	12.18
कार्य संतुष्टि	200	112.36	10.74
शिक्षण प्रभावशीलता	200	118.55	11.92

व्याख्या

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 200 माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की **भावनात्मक बुद्धि का औसत स्तर अपेक्षाकृत उच्च** (M = 126.42) पाया गया। कार्य संतुष्टि का माध्य (M = 112.36) यह संकेत देता है कि अधिकांश शिक्षक अपने कार्य से **मध्यम से उच्च स्तर तक संतुष्ट** हैं। वहीं शिक्षण प्रभावशीलता का माध्य (M = 118.55) यह दर्शाता है कि शिक्षकों का शिक्षण स्तर सामान्यतः प्रभावी है। मानक विचलन के मान यह इंगित करते हैं कि तीनों चरों में शिक्षकों के मध्य **मध्यम स्तर की विविधता** विद्यमान है।

सारणी 2 : सहसंबंध मैट्रिक्स

चर	EI	JS	TE
भावनात्मक बुद्धि (EI)	1	.71**	.78**
कार्य संतुष्टि (JS)	.71**	1	.64**
शिक्षण प्रभावशीलता (TE)	.78**	.64**	1

$p < 0.01$

व्याख्या

सारणी 2 से यह स्पष्ट होता है कि **भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य उच्च सकारात्मक सहसंबंध** ($r = 0.78$) पाया गया, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि बढ़ती है, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता में भी वृद्धि होती है।

इसी प्रकार, **कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच मध्यम सकारात्मक सहसंबंध** ($r = 0.64$) पाया गया, जो यह दर्शाता है कि संतुष्ट शिक्षक अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षण कार्य संपन्न करते हैं।

भावनात्मक बुद्धि और कार्य संतुष्टि के बीच भी **उच्च सकारात्मक संबंध** ($r = 0.71$) पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक अपने कार्य से अधिक संतुष्ट होते हैं। इस प्रकार, पहली तीन शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकृत होती हैं।

सारणी 3 : लिंग के आधार पर भावनात्मक बुद्धि (t-परीक्षण)

समूह	N	माध्य	SD	t	Sig.
पुरुष	120	124.60	12.30	2.41	.016
महिला	80	129.80	11.60		

व्याख्या

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि **महिला शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि का माध्य (M = 129.80)** पुरुष शिक्षकों ($M = 124.60$) की तुलना में अधिक है। प्राप्त t-मान ($t = 2.41$) 0.05 स्तर पर सार्थक है ($p = .016$)। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि **पुरुष एवं महिला शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया जाता है**। इस प्रकार संबंधित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी 4 : अनुभव के आधार पर शिक्षण प्रभावशीलता

स्रोत	SS	df	MS	F	Sig.
समूहों के बीच	1842.36	2	921.18	6.82	.001
समूहों के भीतर	26435.72	197	134.19		

व्याख्या

सारणी 4 से यह स्पष्ट है कि विभिन्न अनुभव स्तर के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में **सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर** पाया गया है ($F = 6.82$, $p < 0.01$)। इसका तात्पर्य है कि शिक्षकों का अनुभव उनकी शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। अधिक अनुभव वाले शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी शिक्षण प्रदर्शन करते हैं। अतः अनुभव संबंधी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी 5 : बहुविध प्रतिगमन विश्लेषण

पूर्वानुमानक	B	Beta	t	Sig.
भावनात्मक बुद्धि	.58	.56	8.42	.000
कार्य संतुष्टि	.41	.39	6.15	.000

$R^2 = 0.67$

व्याख्या

बहुविध प्रतिगमन विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि **भावनात्मक बुद्धि (β = .56)** तथा **कार्य संतुष्टि (β = .39)** दोनों ही शिक्षण प्रभावशीलता के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक हैं। निर्धारण गुणांक ($R^2 = 0.67$) यह दर्शाता है कि ये दोनों चर संयुक्त रूप से शिक्षण प्रभावशीलता की **67% विचरणशीलता की व्याख्या** करते हैं। परिणाम यह संकेत देते हैं कि भावनात्मक बुद्धि का योगदान कार्य संतुष्टि की तुलना में अधिक है। अतः अंतिम शून्य परिकल्पना भी अस्वीकृत होती है।

8. परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अमेठी जनपद के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का विश्लेषण भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि के संदर्भ में करना था।

8.1 भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता के आधार पर

अध्ययन से यह पाया गया कि भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच **उच्च सकारात्मक सहसंबंध** ($r = 0.78$, $p < 0.01$) विद्यमान है। यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक कक्षा में अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षण कार्य संपन्न करते हैं।

यह निष्कर्ष **गोलमैन** (1995) के भावनात्मक बुद्धि सिद्धांत के अनुरूप है, जिसमें उन्होंने आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति एवं सामाजिक कौशल को व्यावसायिक सफलता का आधार माना है। शिक्षण एक मानवीय एवं अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया होने के कारण शिक्षक की भावनात्मक दक्षता उसकी शिक्षण शैली, कक्षा प्रबंधन तथा छात्र-शिक्षक संबंधों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

पूर्ववर्ती अध्ययनों जैसे Chan (2004), Jennings & Greenberg (2009) तथा भारतीय संदर्भ में **शर्मा** (2012) के निष्कर्षों से भी यह स्पष्ट होता है कि उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले शिक्षक अधिक धैर्यवान, सहानुभूतिशील एवं प्रभावी होते हैं। अतः इस अध्ययन का परिणाम सैद्धांतिक एवं अनुभवजन्य दोनों ही दृष्टियों से पुष्ट होता है।

8.2 कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता के आधार पर

अध्ययन में यह भी पाया गया कि कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच **मध्यम सकारात्मक सहसंबंध** ($r = 0.64$, $p < 0.01$) विद्यमान है। यह दर्शाता है कि जो शिक्षक अपने कार्य-परिस्थितियों, वेतन, प्रशासनिक सहयोग एवं व्यावसायिक सम्मान से संतुष्ट होते हैं, वे शिक्षण कार्य में अधिक समर्पित एवं प्रभावी होते हैं।

यह निष्कर्ष **Herzberg के द्वि-कारक सिद्धांत** (1959) से सैद्धांतिक समर्थन प्राप्त करता है, जिसके अनुसार कार्य संतुष्टि प्रेरक कारकों के माध्यम से कार्य निष्पादन को सुदृढ़ बनाती है। शिक्षा जैसे सेवा-प्रधान क्षेत्र में शिक्षक की संतुष्टि उसके भावनात्मक जुड़ाव एवं उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करती है।

भारतीय अध्ययनों जैसे **मिश्रा** (2019) एवं **कुमार** (2021) ने भी यह स्पष्ट किया है कि असंतुष्ट शिक्षक न केवल स्वयं तनावग्रस्त रहते हैं बल्कि छात्रों के सीखने के परिणामों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन का यह निष्कर्ष पूर्व शोधों के अनुरूप है।

8.3 भावनात्मक बुद्धि और कार्य संतुष्टि के आधार पर

अध्ययन में भावनात्मक बुद्धि और कार्य संतुष्टि के बीच **उच्च सकारात्मक सहसंबंध** ($r = 0.71$, $p < 0.01$) पाया गया। यह परिणाम इंगित करता है कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक अपने कार्य-परिस्थितियों को अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं तथा तनावपूर्ण स्थितियों का बेहतर ढंग से सामना करते हैं।

यह निष्कर्ष **भावनात्मक विनियमन सिद्धांत** (Emotion Regulation Theory) के अनुरूप है, जिसके अनुसार व्यक्ति अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर कार्य-संतोष एवं मानसिक संतुलन बनाए रख सकता है। गोलमैन (1995) के अनुसार भावनात्मक बुद्धि व्यक्ति को कार्यस्थल पर संतुलित निर्णय लेने एवं संतोष अनुभव करने में सहायता करती है।

पूर्व अध्ययनों जैसे Brackett et al. (2010) तथा **सिंह** (2018) ने भी यह दर्शाया है कि भावनात्मक बुद्धि कार्य संतुष्टि का एक सशक्त पूर्वानुमानक है। अतः यह निष्कर्ष भी सैद्धांतिक रूप से संगत है।

8.4 लिंग, विद्यालय प्रकार एवं अनुभव के आधार पर

अध्ययन में यह पाया गया कि महिला शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक है। यह परिणाम सामाजिक-भावनात्मक समाजीकरण सिद्धांत से मेल खाता है, जिसके अनुसार महिलाओं में सहानुभूति, संवेदनशीलता एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है।

इसके अतिरिक्त, अनुभव के आधार पर शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर पाया गया। यह निष्कर्ष **अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत (Experiential Learning Theory)** का समर्थन करता है, जिसके अनुसार अनुभव के साथ व्यक्ति की दक्षता, आत्मविश्वास एवं व्यावसायिक निपुणता में वृद्धि होती है।

8.5 बहुविध प्रतिगमन परिणाम

बहुविध प्रतिगमन विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि संयुक्त रूप से शिक्षण प्रभावशीलता की **67% विचरणशीलता** की व्याख्या करते हैं। विशेष रूप से, भावनात्मक बुद्धि का योगदान कार्य संतुष्टि की तुलना में अधिक पाया गया। यह निष्कर्ष **सामाजिक-भावनात्मक अधिगम सिद्धांत (SEL Framework)** के अनुरूप है, जो यह प्रतिपादित करता है कि शिक्षक की भावनात्मक दक्षताएँ शिक्षण गुणवत्ता का मूल आधार हैं। शिक्षण प्रभावशीलता केवल बाह्य संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि शिक्षक के आंतरिक मनोवैज्ञानिक संसाधनों पर भी आधारित होती है।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। जिन शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धि का स्तर उच्च पाया गया, वे शिक्षण प्रक्रिया में अधिक प्रभावी सिद्ध हुए। कार्य संतुष्टि भी शिक्षकों की प्रेरणा एवं प्रतिबद्धता को बढ़ाकर शिक्षण प्रभावशीलता में योगदान देती है। अतः शिक्षकों के भावनात्मक एवं व्यावसायिक विकास पर ध्यान देकर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

[1]. गोलमैन, डी. (1995). *भावनात्मक बुद्धि*. न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स।

[2]. चैन, डी. डब्ल्यू. (2004). भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता: एक सह-संबंधात्मक अध्ययन. *शैक्षिक मनोविज्ञान*, 24(4), 555–569।

[3]. शर्मा, आर. (2012). शिक्षक की भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण प्रभावशीलता. *भारतीय शिक्षा पत्रिका*, 38(2), 45–56।

[4]. मिश्रा, एस. (2019). कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता: एक तुलनात्मक अध्ययन. *शिक्षाशास्त्र शोध जर्नल*, 11(1), 23–34।

[5]. सिंह, आर. (2018). माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धि और कार्य संतुष्टि. *राष्ट्रीय शैक्षिक समीक्षा*, 15(3), 12–21।

[6]. कुमार, एस. (2021). कार्य संतुष्टि का शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव. *भारतीय शैक्षणिक शोध*, 19(1), 55–67।

[7]. जैन, वी. (2017). शिक्षक की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ और कक्षा प्रबंधन. *शिक्षक शिक्षा पत्रिका*, 10(2), 33–42।

[8]. अग्रवाल, पी. (2015). शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धि और शैक्षणिक प्रदर्शन. *शिक्षाशास्त्र और समाज*, 7(2), 44–52।

[9]. वर्मा, ए. (2016). सरकारी और निजी विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन. *भारतीय शिक्षाशास्त्र जर्नल*, 12(1), 28–39।

[10]. यादव, के. (2018). शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि और छात्र संबंध. *राष्ट्रीय शिक्षक जर्नल*, 20(4), 14–24।

[11]. सिंह, डी. (2014). शिक्षण प्रभावशीलता और शिक्षक व्यवहार. *शैक्षिक शोध एवं विकास पत्रिका*, 9(3), 36–45।

[12]. वर्मा, आर. (2013). भावनात्मक बुद्धि और शैक्षणिक नेतृत्व. *भारतीय शैक्षिक प्रबंधन जर्नल*, 8(2), 18–27।

[13]. राठी, एस. (2015). शिक्षक की कार्य संतुष्टि और पेशेवर विकास. *शिक्षक प्रशिक्षण पत्रिका*, 6(1), 30–40।

[14]. चौहान, ए. (2017). माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता: एक क्षेत्रीय अध्ययन. *राष्ट्रीय शिक्षाशास्त्र जर्नल*, 14(2), 51–61।

[15]. गुप्ता, के. (2019). भावनात्मक बुद्धि और शिक्षण गुणवत्ता. *शिक्षाशास्त्र अनुसंधान पत्रिका*, 16(1), 20–29।

[16]. पटेल, आर. (2016). शिक्षक संतुष्टि और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि. *भारतीय शिक्षा और समाज*, 11(3), 42–50।

[17]. शर्मा, डी. (2018). शिक्षक व्यवहार और भावनात्मक बुद्धि: सैद्धांतिक समीक्षा. *शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका*, 13(2), 10–19।

[18]. तिवारी, ए. (2015). कार्य संतुष्टि और शैक्षणिक परिणाम. *राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण जर्नल*, 9(1), 25–34।

[19]. भटनागर, आर. (2014). भावनात्मक बुद्धि और कक्षा प्रबंधन. *शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण*, 7(2), 15–23।

[20]. श्रीवास्तव, एस. (2017). शिक्षक की पेशेवर संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता. *भारतीय शैक्षिक समीक्षा*, 12(3), 38–48।

Cite this Article:

कृष्ण कुमार यादव, प्रो0 नीति, *"माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का भावनात्मक बुद्धि एवं कार्य संतुष्टि के संदर्भ में अध्ययन",* ***International Journal of Emerging Voices in Education****, ISSN: 3107-958X (Online), Volume 1, Issue 4, pp. 27-35, December 2025.*

Journal URL: *https://ijeve.com/*

DOI: *https://doi.org/10.59828/ijeve.v1i4.20*